B.A. III 28/1/22

Saathi

Date

प्र० → आखेट एवं भोजन संग्रहकाल मे मानव द्वारा किये गये प्रकृति मे परिवर्तन पर प्रकाश डालिए

उ → यह काल संस्कृति तथा सभ्यता है। प्रारम्भिक काल तथा आदि मानव से सम्बन्धित है। इसे प्रागैतिहासिक काल भी कहते है। इस काल मे मानव प्रकृतिक पर्यावरण की एक अभिन्न भाग तथा घटक था। उसके कार्य पर्यावरण के अन्य प्राणियो के समान ही थे आदिमानव (भौतिक मानव) के रूप मे था क्योकि उसकी आधारभूत माँग भोजन तकही सीमित थी। आदिमानव अपने उदर की पूर्ति अपने आस पास के पर्यावरण मे जंगलो से फल फूल तथा कंदमूल प्राप्त करके असानी से कर लेता था उसे किसी स्थाई आवास की अवश्यकता नही थी क्योकि वह चलता फिरता घुमक्कड़ प्राणी था तथा पेड़ो पर या गुफाओं मे अपनी राते गुजार देते थे

समय के साथ अपने भोजन के लिए मानव ने जंगली जानवरो का शिकार करना भी सीख लिया मानव का वह आखेट का क्रियाकलाप प्राकृतिक पर्यावरण से संसाधनो का विदोहन का प्रथम सोद्देश्य प्रयास माना जाता है। जबकि प्रकृतिक पर्यावरण के महत्वपूर्ण जैविक घटक होते है। आदिमानव द्वारा जंगली जानवरो के आखेट करने से भी प्राकृतिक पर्यावरण पर कोई खास प्रभाव नही पड़ता था क्योकि उस समय मानव की जनसंख्या अत्यन्त कम थी

अग्नि के अविष्कार ने मानव के क्रियाकलाप एवं व्यवहार मे भारी परिवर्तन किया। जानवरो को भुनने के प्रयोग में की जाने वाली लकड़ियों की माँग मे वृद्धि ने पेड़ो से लकड़िया काटने के लिए नये औजारो का अविष्कार किया अग्नि के अविष्कार के बाद औजारो का अविष्कार प्रौद्योगिकी के विकास मे दूसरा महत्व पुर्ण चरण था। मनुष्य ने जानवरो के लिए कुछ नये हथियारो का भी अविष्कार किया।

इस तरह आग हथियार तथा अस्त्रशस्त्रो (यद्यपि प्राचीन किस्म के ही सही) से लैश प्रारम्भिक मानव भौतिक पर्यावरण से प्राकृतिक संसाधनो के विदोहन के लिए सक्षम हो जाता है। जानवरो को आग मे भूनते समय असावधानी से आस पास की झाड़ियो तथा वृक्षो के आग लगना प्रारम्भ हो गयी

डी० बी० वाटकिन तथा डी० एस० केलर (1982) के शब्दो मे इस काल की सबसे बड़ी विशेषता थी आग के रूप मे मनुष्य के हाथ लगने वाले एक पारिस्थितिकीय यंत्र की उपलब्धि मनुष्य इस यंत्र का पर्यावरण मे परिवर्तन करने के लिए उपयोग किया जाता है।

प्रबन्धक
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षा एवं प्रशिक्षण
पुर, ता. कैसवा